AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

jktsUæ ;kno dk dFkk&lkfgR; esa L=h dh vfLerk dk la?k"k

ORIGINAL ARTICLE

Author
jkgqy
शोधार्थी
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

'kks/k lkj

Lokra«;ksÙkj dFkk&lkfgR; esa dFkkf'kYih jktsUæ ;kno viuh fof'k"V dF; ,oa 'kSyh lEcU/kh fu'py fdj.kksa dh Hkkafr fLFkrçK FkA mudh lEikndh; vkSj dFkk&ys[ku lekt dks ,d u;k vk;ke çnku djrk gSA vktknh ds ckn Hkkjrh; lekt ds bnZ&fxnZ eksg Hkax] Hk"Vrk] csjkstxkjh] foÙkoSlghurk] vdsykiu] L=h 'kks"k.k] tkfr&Hksn] vkØks'k] ?kqVu] vKku vkfn eaMjk jgs FkA bUgha chp ekuo thou Fkek lk x;k FkkA og u;h thou n'kkvksa] u;h fopkjèkkjkvksa] u;h ijaijk tSls lèkkuksa ds fy, lfØ; jgk gSA orZeku Hkkjrh; lekt ijEijkfjd #f<+;ksa] L=h 'kks"k.k] lLdkjksa] 0;klr Hk"Vkpkj] csjkstxkjh] tkfr] èkeZ Hksn vkfn ls eqfä ikus dh dksf'k'k esa yxk gSA LokFkZijrk rFkk thou xr vkik&èkkih ds pyrs L=h ds çfr ghurk cksèk] tUe ysrh L=h] èkkfeZd ijaijkvksa ls tdM+h gqÃ L=h] vuesy fookg] f'k{kk ls ofapr L=h] nkEiR; thou esa vfLFkjrk] L=h dk vutku i#"k fe= dk gksuk] ?kj dh pkj nhokjksa esa fpRdkjrh xqt vuxqat esa L=h dk ekuuk dqn dj j[kk FkkA L=h ds bUgha lkekftd dqjhfr;ksa] eUrO;ksa ,oa L=h 'kks"k.k] L=h ghurk tSls èkkj.kkvksa dks dFkk&f'kYih jktsUæ ;kno us u;h ifjfLFk;ksa] fopkjèkkjkvksa eUrO;ksa rFkk u;s eqY;ksa dks viuh dFkk&lkfgR; dykRedrk ls çLrqr fd;k gSA tks L=h dks ,d uÃ igpku Hkh feyrk gSA

eq[; 'kCn

dFkk&lkfgR;] lekt] jktsUnz ;knoA

कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव कथा–साहित्य लेखन के अलावा स्त्री पराधीनता को लेकर 'हंस' पत्रिका से भी स्त्री अस्मिता का संर्घष को व्यक्त कर रहे थे। ''राजेन्द्र यादव ने हंस के संपादकीयों के माध्यम से वर्तमान भारत की सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं, स्त्रियों और दलितों की पराधीनताओं के बारे में जो सोचा और लिखा है वह उनकी और अन्य बहुतों की कहानियों और उपन्यासों से अधिक सार्थक, प्रभावकारी और आन्दोलनधर्मी रहे। उन सबका हिन्दी समाज ही नहीं हिन्दी पढ़ने वाले गैर–हिन्दी भाषी भारतीय समाज पर गहरा असर पड़ा है, प्रतिक्रियाएँ हुई हैं और हलचलें भी पैदा हुई।''[1]

राजेन्द्र यादव ने हंस के संपादकीय और कथा लेखन के माध्यम से उन्होंने जिन विशेष मुद्दों को भारतीय

समाज के सामने लाया है। उन्होने भारतीय समाज में स्त्री की परतंत्रता का यथार्थ और दलितों की स्वतंत्रता की पूर्ण आकांक्षा और कोशिश का जोरदार विवेचन भी किया है। राजेन्द्र यादव के समग्र लेखन कथा एवं संपादकीय पर विचार किया जाए तो स्त्री की अस्मिता का संघर्ष उनके कथा का और हंस पत्रिका के संपादक का केन्द्रीय विषय है, जिसके माध्यम से वे भारतीय समाज पर चोट ही नहीं करते, बल्कि उसकी गतिशीलता को भरपूर रेखंकित भी करते हैं। 'टूटना' कहानी में पति–पत्नी के संबंधों का विश्लेषण किया गया है, पर यह दोनों कभी प्रेमी–प्रेमिका भी रह चुके थे। 'टूटना' कहानी में उनके पूरे जीवन अर्थात् प्रेमी–प्रेमिका के जीवन में किसी प्रकार की कटुता अथवा विरोध नहीं दिखाया गया है। संभवतः कथाकार राजेन्द्र यादव यह कहना चाहते हैं कि उस अवस्था का प्रेम भावना पर आश्रित होता है। अतः उसकी सच्ची परीक्षा शायद संभव नहीं। जब दोनों पति–पत्नी बनकर जीवन आरंभ करते हैं तो धीरे–धीरे भावुकता गौण पड़ती चली जाती है। उसके स्थान पर छिद्रान्वेषण प्रवृत्ति अथवा शंकाएँ अपना स्थान बनाने लगती हैं। यह प्रश्न भी कहानीकार ने प्रकारांतर से उठाया है कि ऐसा क्यों होता है। कमिशनर दीक्षित को यह बात सहन नहीं थी कि उसकी बेटी सामान्य अध्यापक के साथ ब्याही जाए। वह किशोर को अध्यापक के रूप में स्वीकार करने को तैयार है, किन्तु जामाता अथवा दामाद के रूप में नहीं। विचारणीय बात यह है कि ऐसा क्यों? वास्तव में आदमी को तोलने की हमारी दृष्टि ही इसके लिए उत्तरदायी है और इसी दृष्टि के कारण वह अंत तक लीना को क्षमा नहीं कर पाते हैं। पर क्या लीना के पिता की इस भावना को शंका की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता, वह जिस समाज में पले हैं, उसमें धन को बहुत अधिक महत्व दिया जाता रहा है जिसके बल पर सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है। संभवतः दूरदर्शी पिता इस तथ्य की कल्पना कर लेता है कि लीना जिस वैभव और विलास की अभ्यस्त हो चुकी है, उसे वह किशोर दे नहीं सकेगा और परिणाम होगा कि इनके बीच मनमुटाव होगा और ऐसा ही हुआ। लीना के पिता जानते थे कि उनके समझाने का लीना पर कोई प्रभाव नहीं होगा। अतः प्रतिक्रिया स्वरूप उनके व्यवहार में संयम नहीं रह पाता है। दूसरी और किशोर लीना के पिता को अपना प्रतिद्वंदी पाया और अपने श्वसुर द्वारा किए गए व्यवहारों के लिए वह लीना को दंडित करता रहा। लीना की एक–एक बात में, उसके एक–एक काम में, उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे लीना का पिता ही उसके मूल में हो। इसमें संदेह नहीं कि विवाह के बाद लीना को एक विनम्र और समझदार पत्नी के रूप में अपने को ढालने का जो प्रयत्न करना चाहिए था, वह उससे न हो सका। उसने प्रयत्न किए पर उसके लिए वैसा बन पाना संभव नहीं था। इसी अवस्था में प्रोफेसर मेहता का उसके बीच प्रवेश होना किशोर की शंका को और भड़का डालता है जो सर्वथा स्वभाविक था और इसका परिणाम यह होता है कि दोनों एक दूसरे से अलग हो जाते हैं। राजेन्द्र यादव ने नयी कहानी के सफल हस्ताक्षर के रूप में कहानियों को सजाया–सँवारा है, उसकी मूल संवेदना मानवीय धरातल पर टिकी हुई है। साथ ही मानवीय भाव बोध से भी लैस है। 'जहां लक्ष्मी कैद है' कहानी में ऐसी युवती की मानसिकता का चित्रण हुआ है जिसका नाम इत्तेफाक से लक्ष्मी है। लक्ष्मी के पिता लाला रुपाराम बहुत ही अंधविश्वासी है। अपनी बेटी की शादी इसलिए नहीं करता है कि वह चली जाएगी तो संपत्ति भी चली जाएगी। इसी कारण वह अपने बेटी लक्ष्मी को घर में कैद कर रखता है। घर के अंदर पड़े–पड़े लक्ष्मी की दमित इच्छाएँ उभरने लगती हैं। वह उन्माद का शिकार हो जाती है।

जब उसे पागलपन के दौर पड़ते हैं तो नंगी होकर छाती पीटते हुए बाप से कहती हैः ''ले तूने मुझे अपने लिए रखा है मुझे खा, मुझे चबा, मुझे भोग.... ।[2]

गोविन्द लालाजी के ही गाँव का लड़का है। वह पढ़ाई के साथ–साथ पार्ट टाइम मुंशी का काम करता है। एक दिन लक्ष्मी गोविन्द के पेपर में कुछ पंक्तियाँ रेखांकित करती हैः

''मैं तुम्हें प्राणों से अधिक प्यार करती हूँ।''
''मुझे यहाँ से भगा ले चलो... ।''
''मैं फांसी लगाकर मर जाऊंगी.... ।''[3]

'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी में धार्मिक, नैतिक, आर्थिक और सामाजिक बंधनों को तोड़कर यौन की प्रबल आकांक्षा का प्रवाह दिखालाया गया है तथा प्राचीन रुढ़ियों एवं अंधविश्वासों में नाटकीय जीवन भोगने के लिए

अभिशप्त लक्ष्मी की करुणा व्यथा को उभारा गया है। यहाँ तक लक्ष्मी को क्षोभोन्माद (हिस्टीरिया) की रोग भी हो जाता है। राजेन्द्र यादव ने कुंठित मनोवृति वाले पात्रों को सामाजिक संदर्भों में उजागर किया है। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', कहानी को लेकर विवाद भी रहा है पर यहाँ राजेन्द्र यादव का इरादा सेक्स की अतृप्त प्रवृत्तियों का वर्णन चटखारे लेकर करना नहीं है बल्कि अंधविश्वास की भावनाओं और कुंठित मनोवृतियों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना है। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी की लक्ष्मी अपने पिता के अंधविश्वास धारणा और कैद से निकलना चाहती है। गोविन्द को वह अपने को भगा ले चलने का संकेत देती है। इस प्रकार राजेन्द्र प्रसाद ने स्त्री को लेकर रुढ़ धारणा का विद्रोह किया गया है। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है' कहानी के अलावा गीता की 'प्रतीक्षा', 'खुले पंख टूटे डैने' की मीनल क्रमशः अपने पिता के रूढ़ धारण, रुढ़ी मान्यताओं, पिता की धन–लिप्सा, दुर्व्यवहार तथा एक तरफा प्रेम के कारण प्रेम में असफल रही।

राजेन्द्र यादव मानव मूल्यों के प्रति सजग रहकर अपने चारों ओर की दुनिया के स्पंदनों को उपन्यास एवं कहानी के माध्यम से खुल्लम–खुल्लम प्रस्फुटित करने में सक्षम बने कलाकार हैं इसलिए कहानियों की सामाजिक परिकल्पना उनके व्यक्तित्व का एक पहलू बन जाता है। देखा जाए तो राजेन्द्र यादव के संपादकीय और कथा लेखन में अपने वैचारिक 'अभियान को उन्होंने जिन दो मुद्दों पर केन्द्रित किया है वे है भारतीय समाज में स्त्री की परतंत्रता का यथार्थ और दलितों की स्वतंत्रता की आकांक्षा। इन दोनों में स्त्री की मुक्ति के प्रश्न पर उनके विचारों के संदर्भ में हिंदी जगत में काफी वैचारिक रक्तपात हुआ है। क्यों ना हो? स्त्री की मुक्ति के संदर्भ में राजेन्द्र यादव के विचार पर्याप्त उत्तेजक और भड़काऊ हैं। इस प्रसंग में उनका एक कथन है, ''नारी को अगर स्वतंत्र होना है, तो वेश्या के सिवा कोई रास्ता नहीं है, तभी वह जी सकेगी। वर्ना उसकी लगाम पिता, पति, पुत्र के ही हाथ में है। ना उसका अपना व्यक्तित्व है, न नाम। आज भी बहुसंख्यक औरते अपने इन्हीं सम्बन्धों के माध्यम से जानी जाती है।''[4] राजेन्द्र का मानना है कि स्त्री की मुक्ति का मतलब है उसकी देह की मुक्ति। राजेन्द्र यादव कहते हैं, ''पुरुष की अपेक्षा स्त्री अपने देह में ज्यादा कैद है। वह अपने शरीर में ऊपर उठना या उसे भूलना भी चाहें तो न प्रकृति उसे ऐसा करने देगी, न समाज। उसका सारा सामाजिक मूल्यांकन, सबसे पहले उसके शरीर का मूल्यांकन है। गुण तो बाद में आते हैं।''

'सारा आकाश' राजेन्द्र यादव का कहानी लेखन के बाद पहला उपन्यास है। जिसे राजेन्द्र यादव के पहचान का पर्याय भी माना जाता है। इस उपन्यास में मध्यम वर्गीय युवक–युवती के संघर्ष की गाथा है। प्रभा नामक स्त्री पात्र है जो शिक्षित है तथा स्त्री की घुटन को अभिव्यक्त करती है। समर कहता है, ''सब सहमें से एक और खड़े थे। कोठरी में अपनी चारपाई पर पड़ी भाभी खूब फूट–फूटकर रो रही थी, ''आग लगे ऐसी पढ़ाई में! पढ़ाई अपने लिए होगी कि दूसरे की जान लेने को होगी? हाय राम, पता नहीं अब क्या होने वाला है?'' मुन्नी एक और खड़ी चुपचाप देख रही थी। इतना तो समझ गया कि कोई गम्भीर बात हो गई है। डरी–सहमी–सी एक ओर खड़ी प्रभा को देखते ही कहा जा सकता था कि अपराध इसी ने किया है। कुछ दृढ़ बनने का प्रयत्न करके उसने भर्राए गले से कहा, ''अम्माजी, मुझे पता होता तो मैं कभी भी नहीं करती। मैंने समझा कि कोई सादा मिट्टी का ढेला है।''[5] सुबह जो पंडित जी ने जिन गणेश जी की पूजा की थी न प्रभा ने उन्हें मिट्टी का ढेला समझकर बर्तन माँज दिए थे। उसके बाद प्रभा पर चरित्रहीनता का कलंक लगाते हैं। प्रभा को दहेज को लेकर भी परिवार के सदस्य प्रताड़ित करते हैं। 'उखड़े हुए लोग' इस उपन्यास में राजनीति में छिपे खोखलेपन, भ्रष्टाचार, नैतिक अधः पतन और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के आगे, रूढ़ियों के मोटे जाल को तोड़ने निकले शरद और जया के टूटने की कहानी है। शरद और जया इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं। शरद मध्यम वर्ग का युवक है, एल.एल.बी. पास है। आई.ए.एस. करने लायक घर की हालत नहीं है। वकालत करना उसे पसंद नहीं है। देशबंधु के यहां उसे नौकरी मिलती है परन्तु उसे पता नहीं है कि उसके काम का स्वरूप क्या होगा और वेतन कितना होगा।

शरद की प्रेमिका जया भी बी.ए., बी.टी. है। वह एक विद्यालय में पढ़ाती है। जब शरद को नौकरी मिल जाती है, तो वह अपनी नौकरी छोड़कर शरद के साथ चली जाती है।

शरद और जया जिस परिवेश में रहते हैं, वहां पर विवाह के लिए वर–वधू एक ही जाति का होना आवश्यक है। जातियाँ भिन्न होने के कारण वे परंपरागत विवाह प्रणाली को ठुकराते हुए सम्मिलित जीवन व्यतीत करने की शपथ लेते हैं। साम्प्रदायिक रूप से शादी किए बगैर ही साथ–साथ पति–पत्नी के रूप में रहते हैं। स्पष्ट है कि दांपत्य जीवन में प्रेम का बंधन न होने पर जो अभाव, वैषम्य में असामंजस्य और विक्षोभ पैदा हो जाता है उसकी कहानी बड़ी कलात्मक ढंग राजेन्द्र समाज के सामने प्रस्तुत करते हैं। 'कुलटा', शह और मात, एक इंच मुस्कान, अनदेखे अनजान पूल, मंत्रविध्य जैसे स्त्री चेतना को लेकर राजेन्द्र यादव महत्वपूर्ण कथा लेखन किया है। सभी उपन्यासों में स्त्री के सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है जो उसके स्वतंत्रता के लिए बाधक है। कथाशिल्पी ''राजेन्द्र यादव की विशेषता यह है कि वह किसी की पीड़ा को कई कोणों से देखते और उनके माध्यम से पूरे समाज की पीड़ा को व्यक्त करने का उपक्रम करते हैं। उस दौर में ऐसे कुछ और कथाकार भी हैं, मगर इनकी कहानियों में जीवनानुभव की एक अलग तरह की भूमिका है।''[6] राजेन्द्र यादव के कथा–साहित्य में स्त्री की अस्मिता का संघर्ष पारंपरिक सभी मानवीय संबंधों मूल्यों में स्खलन के संकेत, पति–पत्नी और प्रेमी–प्रेमिका के बनते–बिगड़ते सम्बन्धों की प्रधानता, मुक्त क्षणों की करुण स्मृतियाँ, वैयक्तिक जीवन के समानांतर ही सार्वजनिक जीवन में त्रास, असफल दांपत्य जीवन के अनेक कारणों की ओर संकेत आदि विशेषताओं को देखा जा सकता है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को प्राप्त प्रतिष्ठा के सूत्रधार राजेन्द्र यादव ही रहे हैं। राजेन्द्र यादव, आधुनिक दृष्टि सम्पन्न कथाकार है। उन्होंने युगबोध की सापेक्ष में आधुनिकता को स्वीकार किया जिसमें निरंतर शोध और अन्वेषण था। जो यह कहते हैं कि राजेन्द्र यादव का कथा–लेखन सेक्स व कामवासना में असफल कहानी है तो उन्हें इस सोच से ऊपर उठना होगा। ''उन्होंने सम्बन्धों की तह तक पहुँचकर संपृक्ति/असंपृक्ति की तरलता और रीतेपन में अस्तित्व को पहचाना है। टूटन के दोनों प्रमुख मुद्दों 'अर्थ' और 'सेक्स' को उन्होंने पूरी गंभीरता से पहचाना और समझा है।''[7] कथा रचना तंत्र और संपादकीय लेखन में उन्होंने किसी भी विषय या मुद्दों को वर्जित नहीं समझा और न ही नैतिकता और पाप–बोध के नाम पर यथार्थ संवेदों को निर्वासित किया। बदलते जीवन–संदर्भ के तहत उन्होंने यथार्थ खुदरेपन और अकेलेपन की नियत को देखा–समझा 'अर्थ' फैक्ट पर होने वाले टूटन बिखराव को व्यक्त करने के लिए उन्होंने युवा वर्ग को उसकी आकांक्षाओं, परिदृश्य और परिवार का असंगति में अंगीकार किया। इस प्रकार आधुनिक युग में विज्ञान के बढ़ते प्रयोग, आधुनिक जीवन दृष्टि और राजनीतिक चेतना, सक्रियता, जागरूकता ने परिस्थिति और चरित्र की टकराहट में कथा की केन्द्रीय संवेदना ही बदल दी।

fu"d"k

आजादी के बाद हिन्दी कथा साहित्य में तीव्रता से परिवर्तन हुआ है और उसके स्वरूप में कई प्रवृत्तियों का समाहार हुआ है। मानवीय मूल्य और मर्यादा स्थापित करने वाले कहानियों और उपन्यासों में वर्तमान स्थिति की विवेकशील जागरूकता और सामाजिक आस्था निरंतर प्राप्त होती है, इसलिए वे प्रभावित है। इस दौर में हर नया कथाकार सर्जनात्मक उपलब्धियों को स्पर्श करना चाहता था और उसने अनुभूतिपरक गहनता एवं समाज–सापेक्ष दृष्टि से मनुष्य को उसके विराट एवं यथार्थ परिवेश में देखने–समझने का नया प्रयत्न किया। उसमें एक नई मूल्यपरक दृष्टि का विकास हुआ और उसने तटस्थ एवं निर्वैयक्तिक दृष्टि से समाज की ज्वलंत समस्याओं, नारी उत्पीड़न, नारी अस्मिता, जाति–वर्ण व्यवस्था जैसे परिवर्तनशीलता के सूक्ष्म–से–सूक्ष्म तत्वों एवं मनुष्य की विकृतियों–विशेषताओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया।

राजेन्द्र यादव का कथा–साहित्य आकाश में दैदीप्यमान प्रखर पुँज की भाँति है, जो मानव के आन्तरिक भावों को झकझोर देता है। कथाशिल्पी राजेन्द्र यादव ने वर्तमान युग में बदलते हुए नैतिक मूल्य तथा स्त्री जीवन की दमित, कुण्ठित भावनाओं के बन्धन को एक तरफ मोड़कर आधुनिक प्रगतिशील, प्रगल्भ जीवन में आये अनेक संघर्षों का डटकर सामना करने वाली महिला के रूप में प्रस्तुत किया है। हंस पत्रिका के विवेकशील सम्पादक एवं कथा शिल्पी राजेन्द्र यादव के समग्र कथा साहित्य में स्त्री जीवन की अनेकों समस्याओं को चित्रित किया है और वह भी अबला की बजाय सबला रूप में चित्रित हुई है।

राजेन्द्र यादव, आधुनिक दृष्टि समन्वय कथाकार हैं। उन्होंने युगबोध की सापेक्षता में आधुनिकता को स्वीकार किया जिसमें निरन्तर शोध और अन्वेषण था। उन्होंने आधुनिकता का मुहावरा स्थापित मान्यताओं और यथास्थिति के विरोध में तलाशा। आधुनिकता का और एक पहलू भी था—स्त्री के अस्तित्व—संघर्ष। कथाशिल्पी एक सामाजिक कथाकार है। उन्होंने समाज के शोषित, पीड़ित स्त्री की समस्या को देखी, जिसका अनुभव किया उन्हें सही ढंग से अपनी उपन्यासों और कहानियों में उतारा है।

lUnHk lph

1. ^jktUæ ;kno çfri{k dh vkokt*] सं. डॉ. विश्वमौली, डॉ. राम बचन यादव, साहित्य भण्डार प्रयागराज, पृष्ठ—216।
2. यादव राजेन्द्र, *प्रतिनिधि कहानियाँ,* 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ—30।
3. यादव राजेन्द्र, *प्रतिनिधि कहानियाँ,* 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ—30।
4. *'राजेन्द्र यादव प्रतिपक्ष की आवाज',* सं. डॉ. विश्वमौली, डॉ. राम बचन यादव, 'हंस और राजेन्द्र यादव' डॉ. शिखा सिंह, साहित्य भण्डार प्रयागराज, पृष्ठ—217।
5. यादव राजेन्द्र, *'सारा आकाश'* राधाकृष्ण, नई दिल्ली, पृष्ठ—55।
6. 'स्त्री वजूद की खोज की महागाथा'—मदन कश्यप, *'पाखी'* पत्रिका राजेन्द्र यादव विशेषांक 2011 गौतम—बुद्धनगर, उ.प्र., पृष्ठ—74।
7. ढानकीकर शोभा, *राजेन्द्र यादव के कथात्मक साहित्य में नारी समस्याएँ,* चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर 2011, पृष्ठ—104।

——==00==——